Written by रवि श्रीवास्तव
Monday, 22 November 2010 16:05

□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□

□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□

□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□

पहले जवानी की दहलीज से पहले ही घूंघट में छपि जाती थीं बहारें महलिाओं के सम्बहन्धह में अगर आप देवास में पहले जैसा माहौल देखना चाहते हों तो शायद आपको नराशि ही होना पडेगा□ वहां अब लम्बी घूंघट वाली महलि□ नहीं दखिायी पडती हैं□ हां, पहले जरूर होता था कि किसी भी लडकी के जवानी की दहलीज पर पैर रखने के पहले ही घूघट की चाहरदीवारी में कैद कर दयिा जाता था□ लेकनि अब देवास पहले जैसा नहीं रहा□ यहां पर अपने में ही समिटी'सकिुडी लडकियां नहीं, बल्कि समय के साथ कदमताल करती लडकियां पुरूषों से बराबर का कदमताल करती दखि जाती हैं□ तो आइये, हम आपको ले चलते हैं इस नये और आकर्षक देवास में□ देवास में लड़कियां जन्म से लाड़ली लक्ष्मी नहीं थीं□ जदिगी के कठनि सफर में इन्हें राह दखिाने वाला कोई नहीं था□ चेहरे पर लंबा घूंघट,पछिड़ापन और चहारदीवारी में कैद होकर रह जाना ही शायद इनका नसीब था, लेकनि इन्होंने साहस दखिाया□ तमाम दुश्वारयिों को नकारते हु□ अपने नसीब को चुनौती दी□ आज हालात बदले हु□ हैं□ ये जमाने के साथ कदमताल कर बराबर का सम्मान पा रही हैं□

आत्मवशि्वास से लबरेज इन बिंदास बालाओं को देखकर शायद ही किसी को अंदाजा हो सके कि ये किस गर्त से नकिलकर आई हैं□ देवास की टाटा

Written by रवि श्रीवास्तव
Monday, 22 November 2010 16:05

इंटरनेशनल लमिटिड के लेदर □ क्सपोर्ट फुटवेयर मेकिंग डविजिन में काम करने वाली ये 47 लड़कियां कुछ समय पहले ही चीन से तीन महीने का प्रशक्षिण लेकर लौटी है□ इनमें से ज्यादातर समाज के कमजोर तबके अनुसूचति जाति, जनजाति और पछिड़ा वर्ग से आती है, लेकनि अब पछिड़ापन तो कहीं पीछे छूट-सा गया है□ चेहरे पर आत्मवशि्वास और शरारत ला□ जब पूनम पटेल चीनी भाषा में पूछती है 'नी हाऊ' यानी आप कैसे है? तो सामने वाला चौक जाता है□ इनमें से कुछ ववािहति लड़कियां जब यहां आई थीं तो आधे फुट का घूंघट उनके चेहरे पर था□ लेकनि अब कंपनी के ड्रेस कोड जींस-टी शर्ट के साथ चेहरे पर उन्मुक्त मुस्कान ने उनकी पहचान बदल दी है□

हौसले को मलिी राह- वरषि्ठ आई□ □ स अधकिारी और आयुक्त आदवािसी वकिास अरुण कोचर कहते हैं कि इन लड़कियों के पास हौसला तो था, लेकनि राह नहीं मलि पा रही थी□ मप्र रोजगार □ वं प्रशक्षिण परषिद मैपसेट भोपाल से प्रशक्षिण लेकर इन्होंने इतहिास बना दयिा□

रोज □ क लड़की बेहोश हो जाती थी- टाटा इंटरनेशनल के कार्यकारी नदिेशक ओके कौल बताते हैं कि जब प्रशक्षिण शुरू हुआ,तो रोज इक्का-दुक्का लड़कियां बेहोश होकर गरि पड़ती थीं□ इसकी वजह घर में उन्हें पर्याप्त पौष्टकि भोजन न मलिना था, लेकनि अब कहानी बदल चुकी है□ हर महीने पांच से दस हजार रुप□ तक कमाने वाली इन लड़कियों को घर में न सरि्फ अर्नगि मेम्बर का दर्जा हासलि है, बल्कि उसका बेहतर असर उनकी सेहत पर भी दखिाई देता है□ योजना पूरे प्रदेश के ला□ है□ प्रसन्नता की बात यह है कि इसके नतीजे बेहद उत्साहजनक हैं□ केंद्र सरकार के संस्थान आईडीई□ मआई और □ म□ स□ मई के जरि□ हम प्रदेश के इस वर्ग के लड़के लड़कियों को प्रशक्षिण दे रहे है□ इंदौर में इसकी शुरुआत 25 नवंबर से होने जा रही है□

मध्□ यप्रदेश के आदमि जाति □ वं अनुसूचति जाति कल्याण वभिाग के मंत्री वजिय शाह बताते हैं कि बदल ग□ जदिगी के मायने लड़कियों की जदिगी अब उत्साह से लबालब है□ टाटा कंपनी में 396 दलति और आदवािसी समुदाय की 41 लड़कियां प्रशक्षिण लेकर नौकरी कर रही है□ मेपकास्ट के महानदिेशक

Written by रवि श्रीवास्तव
Monday, 22 November 2010 16:05

प्रदीप खंडेलवाल कहते हैं कि कंपनी में और भी रोजगार की गुंजाइश है। प्रदेश के किसी भी हिस्से से इच्छुक दलित और आदिवासी वर्ग की पांचवीं तक शिक्षित लड़की प्रशिक्षण लेकर कंपनी में रोजगार पा सकती है।

आदिवासी सीमा परते बड़े उत्साह से कहती हैं कि 'सर चीन में हमने देखा कि वहां टॉयलेट में शीशा नहीं लगा था। जब हमने वजह पूछी तो चाइनीज लड़कियों ने कहा कि शीशा लगा हो तो मेकअप वगैरह की तरफ ध्यान जाता है और वक्त बरबाद होता है। वहां से लौटने पर हमने यहां भी टॉयलेट से शीशे हटवा दि।।' इन लड़कियों ने दुनिया भर में शू निर्माण की दिग्गज कंपनी जॉर्ज शू डागवान से प्रशिक्षण लिया।